वैशेषिक दर्शन- III

Syllabus: पदार्थ सिद्धांत।

(ङ•) विशेष

वैशेषिक दर्शन के अनुसार नित्य एवं निरवयव द्रव्यों का विशिष्ट व्यक्तित्व ही विशेष है। विशेष के कारण ही वे एक–दूसरे से भिन्न रूप में पहचाने जाते हैं। विशेष अन्य सभी पदार्थों से भिन्न है। यह न तो द्रव्य है, न कर्म, न सामान्य और न ही समवाय। इसे किसी भी अन्य पदार्थ में अन्तर्भूत नहीं किया जा सकता। इसी कारण विशेष को स्वतंत्र पदार्थ कहा गया है। पुनः विशेष उन नित्य द्रव्यों में पाया जाता है जो वास्तविक हैं। अतः विशेष भी वास्तविक हैं। वास्तविक होने के कारण इसे स्वतंत्र पदार्थ मानना स्वाभाविक है।

नित्य द्रव्यों में रहने के कारण विशेष भी नित्य होते हैं, नित्य द्रव्य अनन्त हैं, अतः उनके विशेष भी अनन्त हैं, प्रत्येक विशेष स्वभावतः व्यापर्तक होता है।

(च) समवाय

- परस्पर आधार एवं आधेय के रूप में संबद्ध दो अयुतसिद्ध पदार्थों का संबंध समवाय है। समवाय एक नित्य और अपृथक्करणीय संबंध है जो दो अयुतसिद्ध वस्तुओं में होता है। दो पदार्थों का वैसा संबंध अयुतसिद्ध कहलाता है जिसमें एक अपने विनाश की अवस्था तक दूसरे पर आश्रित होता है। अयुतसिद्ध संबंध से जुड़ी वस्तुओं में एक वस्तु आधार होती है और दूसरी आधारित। संयोग जहाँ अनित्य एवं युतसिद्ध संबंध है, वहीं समवाय नित्य एवं अयुतसिद्ध संबंध है।
- न्याय–वैशेषिक दर्शन अपनी वस्तुवादी मान्यता के अनुरूप ही समवाय को एक स्वतंत्र पदार्थ के रूप में स्वीकार करता है। इनके अनुसार यदि द्रव्य वास्तविक है और गुण भी वास्तविक है तो फिर उनका संबंध भी वास्तविक ही होना चाहिए। अब यदि समवाय संबंध वास्तविक है तो फिर वह भी एक स्वतंत्र पदार्थ है। चूँकि समवाय भी हमारे ज्ञान का विषय बनता है, अतः वह पदार्थ है।
- **समवाय संबंध के पाँच भेद**
  1. अवयव–अवयवी संबंध, जैसे तंतु एवं पट का संबंध।
  2. द्रव्य–गुण संबंध, जैसे पुष्प और सुगन्ध का संबंध।
  3. द्रव्य–कर्म संबंध, जैसे जल में गति।
  4. सामान्य एवं विशेष का संबंध, जैसे प्रत्येक परमाणु में उसका अपना धर्म 'विशेष' समवेत होता है।
  5. विशेष एवं नित्य द्रव्य का संबंध, जैसे प्रत्येक परमाणु में उसका अपना धर्म 'विशेष' समवेत होता है।
- न्याय मतानुसार समवाय का ज्ञान प्रत्यक्ष से होता है, जबकि वैशेषिक मतानुसार समवाय का ज्ञान अनुमान से होता है। समवाय संयोग से भिन्न है। समवाय को ठीक से समझने के लिये संयोग को समझना आवश्यक है।

HEMCHANDRA'S PHILOSOPHY

- **समवाय और संयोग में संबंध**

समवाय	संयोग
1. समवाय एक स्वतंत्र पदार्थ है।	1.संयोग स्वतंत्र पदार्थ रूप में स्वीकृत नहीं है। इसे न्याय वैशेषिक दर्शन में गुण के रूप में स्वीकार किया गया है।
2. समवाय एक आन्तरिक संबंध है। समवाय से जुड़े पदार्थ परस्पर स्वतंत्र होकर अपना अस्तित्व और स्वरूप कायम नहीं रख सकते।	2.संयोग बाह्य संबंध है। इसमें दो वस्तुएँ 'संयोग' के खत्म होने पर भी अपना अस्तित्व कायम रखती है।
3. यह नित्य संबंध है।	3.संयोग संबंध अनित्य होता है।
4. यह अनिवार्य संबंध है।	4.संयोग संबंध आकस्मिक होता है।
5. समवाय किसी कर्म या गति पर आधारित नहीं होता।	5.संयोग के लिए संबंधित होने वाली वस्तुओं में से कम से कम एक में गति या कर्म का होना आवश्यक है।

- **आलोचना :** शंकर के अनुसार समवाय को स्वतंत्र पदार्थ के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता। ऐसा मानने पर अनवस्था दोष अत्पन्न होता है। यदि दो पदार्थ में संबंध स्थापना हेतु तीसरे पदार्थ के रूप में समवाय को मानना आवश्यक है, तो फिर उस समवाय रूपी पदार्थ का अन्य पदार्थों से संबंध स्थापना हेतु किसी दूसरे समवाय की कल्पना करनी पड़ेगी। और इस प्रकार यहाँ अनसस्था दोष की उत्पत्ति हो जाती है।

HEMCHANDRA'S PHILOSOPHY